Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-300-303

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 300-303

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

अरविन्द कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
डी. एस. वी परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तरखण्ड.

Corresponding Author :
अरविन्द कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
डी. एस. वी परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल, उत्तरखण्ड.

शैलेश मटियानी की कहानियों में दलित विमर्श

सारांश : दलित कथा साहित्य और दलित विमर्श के विस्तार में मराठी साहित्य के बाद हिन्दी साहित्य का प्रमुख स्थान रहा है। कुमाऊँ अंचल में जन्में शैलेश मटियानी हिन्दी के बड़े कथाकार माने जाते हैं। प्रेमचन्द के बाद दलित कथा लेखन में इसका प्रमुख स्थान रहा है। इन्होंने दलित कथा लेखन तथा दलित विमर्श को अपनी कहानियों में अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। सिर्फ ग्रामीण ही नही अपितु नगरीय तथा महानगरीय समाज में निम्न वर्ग, गरीब तथा दलितों की क्या दशा है, उसका वर्णन मटियानी जी ने अपने कहानी साहित्य में मर्मस्पर्शी ढंग से किया है।

मुख्य शब्द- दलित, दलित चेतना, कुमाऊँ, संस्कार, दलित विमर्श, बम्बईया।

शैलेश मटियानी का कथा साहित्य दलित विमर्श की अमूल्य थाती है। उन्होंने दलित साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। कथा साहित्य की रचना की दृष्टि से शैलेश मटियानी प्रेमचन्द के बाद दूसरे बड़े कथाकार है। इन्होंने 17 उपन्यास और 300 से अधिक कहानियों की रचना की। शैलेश मटियानी का जन्म उत्तराखण्ड राज्य के अल्मोड़ा जनपद के बडेछीना नामक गाँव में हुआ था, इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव बडेछीना तथा मैट्रिक की शिक्षा अल्मोड़ा से प्राप्त की। बाल्यावस्था में ही माता-पिता की मृत्यु हो जाने के कारण इनकी बाल्यावस्था बहुत कठिनाई पूर्ण बीती। बचपन में दादा-दादी के आश्रय में रहते हुए सुबह जानवरों का गोबर साफ करना, उन्हें चारा पानी देकर स्कूल जाना और स्कूल से वापस आकर जानवरों को चराने हेतु जंगल में ले जाना इनकी दैनिक दिनचर्या के अंग थे। कुमाऊँ अंचल में पले-बढ़े होने के कारण उनके कथा साहित्य में कुमाऊँ अंचल के जीवन यथार्थ का मानवीय संवेदना के साथ चित्रण प्राप्त होता है। इन्होंने गरीबी को जिया और अपनी आँखों से दलित, असहाय, पीड़ित, निर्धन, निम्न वर्ग के जीवन को देखा है यही कारण है कि उनकी कहानियों में हमें भोगे हुए यथार्थ का चित्रण प्राप्त होता है।

शैलेश मटियानी हिन्दी कथा साहित्य के विलक्षण प्रतिभा रखने वाले कथाकार हैं दलित रचनाकार रचना करते समय अन्य

साहित्यकारों की तुलना में अपने समाज से गहरा जुड़ा हुआ होता है। वह अपने निजी दुःख से ज्यादा अपने समाज की पीड़ा को महत्व देता है। अपनी जाति, अपना वर्ग और दलित समाज उसके लिए सर्वोपरि होता है उसके समाज का दुःख दर्द उसे अपने दर्द से अधिक पीड़ा देता है। दलित वर्ग से जुड़े होने के कारण मटियानी जी ने दलित पीड़ा को समझा और उसे अपनी लेखनी के द्वारा व्यक्त किया। कुमाऊँ मण्डल में जन्म लेने के कारण उन्हें अपनी मातृभूमि से सदैव विशेष लगाव रहा है जिसके कारण उन्होंने कुमाऊँ मण्डल के परिवेश के ऊपर अनेक कहानियाँ लिखी है। शैलेश जी के जीवन का अधिकांश भाग दिल्ली, बम्बई तथा इलाहाबाद जैसे महानगरों में व्यतीत हुआ जिसके कारण बम्बई महानगर में दलित समाज की दुर्दशा का चित्रण भी इनकी कहानियों में प्राप्त होता है।

'दलित' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है- जिसका दलन या उत्पीड़न किया गया हो। दलित शब्द पर विचार करती हुई डॉ0 भारती झा लिखती है कि "दलित शब्द का सामान्य अर्थ है-दरिद्र और उत्पीड़न। इसका अर्थ दबा, कुचला, अपमानित और प्रताड़ित प्राणी होता है। वर्तमान समय में दलित का अर्थ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के अर्थ में रूढ़ होने लगा है जिसका दलन व दमन हुआ हो, दबाया गया हो, जो उत्पीड़न, शोषित, सताया, गिराया, उपेक्षित, घृणित, रौंदा, मसला, कुचला, विनष्ट, मर्दित, पस्त, हत्साहित और वंचित हो वह दलित है। दलित किसी जाति व धर्म का कोई शब्द नही है वह कोई भी हो सकता है। शूद्र हो, स्त्री हो या अन्य कोई भी हो।"[1] दलित शब्द की व्याख्या देते हुए डॉ0 पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी लिखते हैं "दलित एक संवेदन है विचार, जिसका अर्थ दबाया गया मनुष्य, किसी भी जाति, वर्ण, धर्म एवं भौगोलिक क्षेत्र का हो दलित है।"[2] इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दलित को सामान्य अर्थ दबे-कुचले समुदाय से लिया जाता है चाहे वह किसी जाति, समुदाय या धर्म से हो।

शैलेश मटियानी ने दलित जीवन संदर्भों पर पर्याप्त मात्रा में कहानियाँ लिखी हैं जिसमें अहिंसा, जुलूस, हारा हुआ, संगीत भरी संध्या, माँ तुम आओ, अलाप, लाटी, भँवरे की जात, आँधी से आँधी तक परिवर्तन, आक्रोश, भय, आवरण, दो दुःखों का एक सुख, चुनाव, पेरामुखी, चिट्ठी के चार अक्षर, बलि, सतजुगिया, इब्बूमलंग, व्यास आदि प्रमुख हैं। इन कहानियों में वर्णित कथा और पात्रों को भावभूमि के आधार पर मुख्यतया तीन भागों में बाँट सकते हैं। पहला वह वर्ग जो कोई समस्या आने पर सामाजिक व्यवस्था के आगे लाचार हो जाता है, और उसे जस का तस स्वीकार कर लेता है। दूसरा वर्ग पहले की अपेक्षा थोड़ा मुखर वर्ग है जो अपने प्रति हो रहे अन्याय के विरुद्ध आक्रोशित तो रहता है किन्तु इस आक्रोश को समाज के सामने व्यक्त नही करता और सामाजिक नियमों को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेता है। तीसरा वर्ग उपरोक्त दोनों वर्गों की तुलना में अधिक जाग्रत समूह है जो अपने तथा अपने समुदाय के प्रति हो रहे अत्याचार का न सिर्फ विरोध करता है अपितु मुखर होकर इसके लिए संघर्ष भी करता है।

शैलेश मटियानी की कहानी 'अहिंसा' में सरकारी अव्यवस्था का चित्र हमारे सामने आता है जिसमें दलित पात्र अपनी पत्नी का इलाज सरकारी अस्पताल में करवाना चाहता है, जिसके लिए धन एकत्र करने की घटना, कर्मचारियों और डॉक्टरों का अमानवीय व्यवहार, भ्रष्टाचार और लापरवाही भरे रवैया के कारण ठीक से इलाज न हो पाने के कारण उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है परन्तु भ्रष्टाचार समाप्त नही होता है। इसी कारण वह डॉक्टर की हत्या करने पर उतारु हो जाता है। 'जुलूस' कहानी में जब बुधराम को पुलिस गिरफ्तार करने आती है तो उसकी माँ उससे कहती है-"क्यों, कानों में घड़ा भर तेल डाले पड़ी रहती हो क्या? इतना ही नही सुनायी पड़ा कि बाप लोग कब से दरवाजा ठकठका रहे हैं।"[3] निम्न वर्ग के प्रति पुलिसिया बर्ताव को हमारे सामने लाती है। 'संगीत भरी संध्या' कहानी में रमदिया अपने छोटे भाई को खानदानी पेशे का महत्व बताता है लेकिन उसका छोटा भाई इसके प्रति उदासीन है जिस पर रमदिया कहता है कि "खानदानी होता तो जरा तबले-सारंगी, हरमोनियम में सुर लगाता"[4] गैर दलितों से मिलने

वाली उपेक्षा के कारण सुन्दरिया और मोहिनी अपनी पेशे से नफरत करने लगते हैं। इस कहानी में महिलाओं के अन्दर जन्म लेती दलित चेतना की चिंगारी को हम देख सकते हैं। 'माँ तुम आओ' कहानी भी दलित वर्ग में जन्म लेती दलित चेतना के आत्मबोध को व्यक्त करती है बाहरी समाज द्वारा उसके परिवार को तोड़ने का प्रयास करती है। 'अलाप' और 'लाटी' कहानियों में दलितों के प्रति शून्य होती संवेदना का वर्णन हमें प्राप्त होता है। 'परिवर्तन' कहानी में नायक देवराम अपने समाज में सुधार के लिए प्रयत्नशील दिखायी देता है। मटियानी की अन्य कहानी 'भँवरे की जाति' की नायिका कुंतुली में जाति के इस विभेद और ऊँच-नीच की भावना से पीड़ित है।

दलित चेतना को विस्तार देती मटियानी जो कि एक अन्य कहानी है 'सतजुगिया' जिसमें दलित समाज में व्याप्त भय और आतंक के भाव के हमें दर्शन होते हैं। इस कहानी में हरराम और पररराम नामक पिता-पुत्रों की कहानी है। हरराम पुरोहित केशवचन्द्र की तंत्र शक्ति से डरा हुआ और आतंकित है। हरराम के पुत्र पररराम ने युवा शिल्पकारों को इकट्ठा करके एक संगठन का निर्माण किया है जिसमें वह कहता है कि कोई भी शिल्पकार ऐसा कोई काम नहीं करेगा जिससे उनको घृणित और दलित समझा जाय। जब पुरोहित केशवराम की भैंस मर जाती है तो वह हरराम को मरी भैंस उठाने के लिए संदेश भेजता है। हरराम अपने पुत्र को इसे करने को कहता है पर पररराम यह काम करने से मना कर देता है जिस पर हरराम कहता है कि "खुला ब्राह्मण द्रोह है। यह साले तू नही तो क्या यह 70 साल का बूढ़ा तेरा बाप खीचेगा 10 मन की भैंस?"[5]

'लाटी' कहानी में दलित स्त्री का बखूबी चित्रण हमें प्राप्त होता है जो हमारे सामने दलित चेतना और स्त्री के प्रति समाज के भावों को उजागर करती है। 'परिवर्तन' करनी दलित कहानी साहित्य की दृष्टि से एक सशक्त कहानी है जिसमें देवराम और जसुली के माध्यम से दलित चेतना के विस्तार को कहानीकार ने रेखांकित किया है।

मटियानी जी एक अन्य प्रसिद्ध कहानी 'दो दुःखों का एक सुख' में मिरदूला कानी जो सीढ़ियों पर बैठकर भीख माँगती हैं भिखारियों का जीवन कैसा दुःख भरा होता है उसे बताते हुए मिरदुला कानी कहती हैं कि "हे राम! कैसा पलीत जन्म दिया मुझे अभागिन को? डोमड़े के घर पड़ी हूँ। भीख माँगती जीवन काटती हूँ।"[6] भय कहानी को अमानवीयता यह कि एक भिखारी जो जिंदगी भर भीख मांगता रहा आज उसकी लाश का इस्तेमाल भी भीख माँगने के लिए किया जा रहा है। कथा नायक अपने भय और अपराध को यह कहकर छिपाने का प्रयास करता है कि "अरे तू सीताराम भिखारी की लाश से पैसे इकट्ठे किये जाने का गम क्यों किये जा रहा है? तू मर जाएगा? तो तेरी लाश पर भी।"[7] भीख माँगने की बात करता है।

मुम्बई के महानगरीय समाज में दलित स्त्री की क्या दशा है उसका वर्णन 'एक कोप चाय दो खारी बिस्कुट' में शैलेश मटियानी लिखते हैं कि "हम औरत लोगों की जिंदगी भी क्या बदनसीब है..... मैं भी कैसी बेशरम हूँ? रोटी के लिए बोसे भी देना और बोटिया भी ..... थूँ है ऐसी जिंदगी पर।"[8] 'प्यास' कहानी एक जेब कतरे दलित शंकरिया की कहानी है जिसे जिंदगी के अभाव और परिवेश ने अपराध की दुनिया में ढकेल दिया है। एक बार चोरी करते हुए पकड़े जाने पर लोगों के पिटाई के डर से खुद को पुलिस के हवाले कर देता है। पुलिस की पिटाई से बेहोश हो जाने पर मटियानी जी उसके विषय में लिखते हैं "मैं ये नही कहता कि एक आदमी को किसी दूसरे आदमी की जेब काटने, चोरी करने या गुण्डागिरी फैलाने की छूट होनी चाहिए। मगर मैं यह जरूर कहना चाहता हूँ कि जो सरकार अपने लाखों नागरिकों के लिए रोजी-रोटी की व्यवस्था करने में अपने को निकम्मा पाती हो उसे ऐसा कोई कानून बनाने का अधिकार नही जो भुखमरी और बेकारी से मजबूर इंसान को रोजी-रोटी देने की जगह नृशंस यातनाएँ देते हो।"[9]

दलित जीवन को अभिव्यक्त करती एक अन्य प्रसिद्ध कहानी 'आक्रोश है जिसमें स्त्री के प्रति आकर्षण, जातीय पवित्रता के टूटन का भय, अन्तर्जातीय विवाह की आहट तथा उच्च वर्ग की मनोदशा का वर्णन-चित्रण किया गया है जिसमें कांता

बाबू के परिवार के मुखिया इस बात से चिंतित होते हुए कहते हैं कि "आजकल के लौडे-लौंडियाओं को अन्तर जातीय शादी-ब्याह करते देर क्या गलती है-भला।"[10]

दलित जीवन और निम्न वर्ग की पीड़ा का मटियानी जी को सहज ही अहसास है दलित जीवन उनका स्व अनुभूति वाला जीवन रहा है। उनके लेखन में दलितों की जीवन शैली का खुलकर वर्णन किया गया है। उनकी अनके कहानियों में हमें अनाथ बच्चों की व्यथा, कसक और वेदना देखने को मिलती है। उनके कुमाऊँ के परिवेश की कहानियों में तथा इलाहाबाद के परिवेश की कहानियों मे हमें दलित विमर्श के प्रति नयी चेतना दिखायी देती है। मटियानी की कहानियों, खासकर दलित पृष्ठभूमि की कहानियाँ हमें सदैव एक अलग धरातल पर ले जाती है जो हमें दलितों की स्थिति पर सोचने के लिए मजबूर करती है।

संदर्भ सूची :

1. डॉ0 झा भारती, भारत में दलित साहित्य एवं दलित चेतना, लेख, नव निकष (शोध विशेषांक), 2012 अंक, पृष्ठ-60.
2. डॉ0 सत्यप्रेमी, पुरुषोत्तम, दलित, सुमन, सुमन लिपि, मासिक, बम्बई, 1944, पृष्ठ-5.
3. मटियानी, शैलेश, शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियां, भाग-4, सं0 राकेश मटियानी, प्रकल्प प्रकाशन, मोती लाल नेहरू नगर, द्वितीय संस्करण 2008, पृष्ठ-59.
4. वही, पृष्ठ-268.
5. वही, भाग-3, पृष्ठ-451.
6. वही, भाग-1, पृष्ठ-404.
7. वही, भाग-2, पृष्ठ-339.
8. वही, भाग-2, पृष्ठ-154.
9. वही, भाग-1, पृष्ठ-59.
10. वही, भाग-2, पृष्ठ-164.

•